प्रादर्श प्रश्न पत्र 2012

विषय – हिन्दी विशिष्ट

कक्षा – बारहवीं

समय– 3 घंटे **पूर्णांक– 100**

निर्देश–

1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. प्रत्येक प्रश्न के लिए आवंटित अंक उनके सामने अंकित है।
3. प्रश्न क्र. 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए है। प्रत्येक प्रश्न के लिए $1 \times 5 \times 5 = 25$ अंक निर्धारित है।
4. प्रश्न क्र. 6 से 10 तक में प्रत्येक के उत्तर लगभग 50 से 75 शब्दों में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु 4 अंक निर्धारित है।
5. प्रश्न क्र. 11 से 19 तक में प्रत्येक के उत्तर 100 से 120 शब्दों में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न के 5 अंक निर्धारित है।
6. प्रश्न क्र. 20 का उत्तर लगभग 250/300 शब्दों में लिखिए। इसके लिए 10 अंक निर्धारित है।

प्रश्न 1. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति दिये गये विकल्पों में से उचित शब्द का चयन कर कीजिए।

1. सहृदय के हृदय में स्थित अस्थाई भाव को.....कहते है।
   (संचारी भाव/अनुभाव)
2. यदि वह आता तो मैं चला जाता, यह .....वाक्य है।
   (आज्ञावाचक/संकेत वाचक)
3. सुरबाला की दृष्टि में परमात्मा.....में विराजते है।
   (नदी/भाड)

4. मालिन और पुष्प दोनों पुराने.....है।

(साथी / दुश्मन)

5. प्रताप.....पत्र था।

(दैनिक / साप्ताहिक)

प्रश्न 2. सही विकल्प चुनिए –

(1) भारत की प्राचीनता की खोज करने की बात कही है –

(अ) महत्रा कविता में (ब) बढ़ सिपाही

(स) नदी के द्वीप (द) राष्ट्र के श्रृंगार

(2) नए मेहमान एकांकी में आगन्तुक रेवती का था –

(अ) पिता (ब) भाई

(स) देवर (द) मामा

(3) नैनो का शाब्दिक अर्थ है –

(अ) बड़ा (ब) सूक्ष्म

(स) मोटा (द) पतला

(4) जिन छंदों की रचना का आधार मात्राएं होती है, उन्हें कहते है –

(अ) मात्रिक छंद (ब) वर्णिक छंद

(स) सम छंद (द) विषम छंद

(5) खून खौलना मुहावरे का अर्थ है –

(अ) क्रोध आना (ब) क्रोध पी जाना

(स) खून गर्म होना (द) खून पी जाना

प्रश्न 3. निम्नलिखित कथनों में सत्य / असत्य छांटिए –

1. सिंह की खेती किसी स्यार को खाने मत देना।
2. अध्यक्ष महोदय एक हास्य रचना है।
3. रामकुमार वर्मा ने असहयोग आंदोलन में भाग लिया।

4. कविता पढ़ते समय विराम या रूकने को तुक कहते है।

5. प्रश्नवाचक वाक्य के अंत में (!) चिन्ह लगाया जाता है।

प्रश्न 4. सही जोड़ी बनाइए –

	क	–	**ख**
(1)	रामचरित	–	एकांकी
(2)	मेरे जीवन के कुछ चित्र	–	महाकाव्य
(3)	तात्या टोपे	–	खण्डकाव्य
(4)	अक्ल के घोड़े दौड़ाना	–	आत्मकथा
(5)	पंचवटी	–	मुहावरा

प्रश्न 5. एक वाक्य में उत्तर दीजिए :–

1. गौतम के पुत्र का नाम क्या था?
2. गाय करूणा की कविता है कथन किसका है?
3. केवट की जीविका का एक मात्र आधार क्या था?
4. गद्य–पद्य मिश्रित रचना को क्या कहते है?
5. क्षेत्र विशेष में विचार विनिमय का साधन क्या है?

प्रश्न 6. गजाधर बाबू दोबारा चीनी मिल की नौकरी पर क्यों गये?

अथवा

लेखक रामनारायण उपाध्याय ने अपनी पुस्तक की पर्याप्त रॉयल्टी किसे माना है? और क्यों?

प्रश्न 7. कवि बालकृष्ण शर्मा नवीन ने युवाओं को काल के भी काल क्यों कहा है?

अथवा

सूर वात्सल्य के चितेरे है इस कथन की विवेचना कीजिए।

प्रश्न 8. मिट्टी कुम्हारा को क्या सीख देती है?

अथवा

नदी के द्वीप कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 9. प्रयोगवादी काव्य की चार विशेषताएं लिखिए।

अथवा

नई कविता की दो विशेषताएं एवं दो कवियों व उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।

प्रश्न 10. गद्य की विधाओं का वर्गीकरण कर नाम लिखिए।

अथवा

आत्मकथा एवं जीवनी में चार अंतर बताइये।

प्रश्न 11. देवकी कारागार में बैठी किस प्रकार के आनंद का अनुभव कर रही थी?

अथवा

रामदरश मिश्र आजीवन मनुष्यता के प्रति संवेदनशील बने रहे इस कथन की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न 12. (अ) ब्याज स्तुति एवं ब्याज निंदा अलंकार में अंतर बताइये।

(ब) महाकाव्य के तीन लक्षण लिखिए।

अथवा

(अ) छप्पय छंद की परिभाषा लिखिए।

(ब) हास्य रस का उदाहरण दीजिए।

प्रश्न 13. (अ) भाषा और बोली में अंतर बताइये। कोई दो।

(ब) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

1. आकाश के तारे तोड़ना।
2. अपने मुंह मिया मिट्ठू बनना।

अथवा

(अ) निर्देशानुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए।

1. ईमानदार व्यक्ति का सम्मान सभी करते है। (मिश्रवाक्य)
2. मोहन अब तुम्हें जाना चाहिए। (आज्ञावाचक)

(ब) भाव विस्तार कीजिए –

''अज्ञान सर्वत्र आदमी को पछाड़ता है।''

प्रश्न 14. शरद जोशी अथवा जैनेन्द्र कुमार का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर दीजिए।

(1) दो रचनाएं (2) भाषा शैली (3) साहित्य में स्थान।

प्रश्न 15. घनानंद अथवा जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर दीजिए।

(1) दो रचनाएं (2) भाव पक्ष (3) कलापक्ष (4) साहित्य में स्थान।

प्रश्न 16. निम्नांकित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

आज के विश्व में तो रंग का जादू सिर चढ़कर बोलता है। सतरंगा, तिरंगा, इकरंगा तो उड़ते ही है। अब काला भी उड़ने लगा है। यही नहीं अपने अपने देश की अपनी–अपनी बात कहीं रंग जमता है। कहीं रंग उखड़ता है, कहीं रंग चढ़ता है तो कहीं उतरता है, सब जगह रंग। काव्य में भी रंग होते है, बड़े मजेदार, साधारण रंगों से थोड़े भिन्न, स्पर्श से परे, चटकिले और धूमिल।

अथवा

दुःख या आपत्ति का पूर्ण निश्चय न रहने पर उसकी संभावना मात्र के अनुमान से जो आवेग शून्य भय होता है, उसे आशंका कहते है। उससे वैसी आकुलता नहीं होती। उसका संचार कुछ धीमा पर अधिक समय तक रहता है। घने जंगल में जाता हुआ यात्री चाहे रास्ते भर इस आशंका में रहे कि कहीं चीता न मिल जाए, पर वह बराबर चल सकता है।

प्रश्न 17. निम्नांकित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

आज मैंने शक्ति के अमृत का घूंट पिया,
धरती ने अपना धानी घूंघट उघारकर,
मुझमें अपना ज्वलंत वसन्त निहार लिया।

अथवा

बाल्हा मैं बैरागिणी हूंगी हो।
जो–जो भेष म्हांरो साहिब रीझै, सोइ सोइ भेष घरूंगी हो।
सील संतोष धरूं घट शरीर, समता पकड़ रहूंगी हो।

प्रश्न 18. निम्नांकित अपठित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिये।

जिस प्रकार तार के बिना वीणा और धुरी के बिना रथ का पहिया बेकार है, उसी प्रकार नारी के बिना मनुष्य का सामाजिक जीवन। इस सच्चाई को भारतीय ऋषियों ने बहुत पहले जान लिया था। वैदिक काल में मनु ने यह घोषणा करके कि– जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते है। नारीकी महता प्रतिपादित की है। भारतीय नारी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह प्रत्येक युग में किया है। वह अपने विशिष्ट गुणों के कारण आधुनिक युग में भी पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में कार्य कर रही है।

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

प्रश्न 2. उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

प्रश्न 19. वाद विवाद प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने पर मित्र को बधाई पत्र लिखिए।

अथवा

नगर पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखकर सूचित कीजिए कि आपके मोहल्ले में चोरी की घटनाओं में वृद्धि हो रही है।

प्रश्न 21. निम्नांकित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए।

1. बन पानी सब सून।
2. जीवन में खेलों का महत्व।
3. इण्टरनेट– आज की आवश्यकता।
4. महंगाई– एक ज्वलंत समस्या।
5. समाचार पत्र की उपयोगिता।

– – – – – –

आदर्श उत्तर
विषय – हिन्दी विशिष्ट
कक्षा – बारहवीं

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर –

उत्तर 1. रिक्त स्थान की पूर्ति –

1. संचारी भाव
2. संकेत वाचक
3. भाड़
4. साथी
5. साप्ताहिक

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 2. सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. महता कविता में
2. भाई
3. सूक्ष्म
4. मात्रिक छंद
5. क्रोध आना

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 3. सत्य/असत्य छांटिये –

1. सत्य
2. असत्य
3. सत्य
4. असत्य

5. असत्य

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 4. सही जोडियां बनाइये–

	क	–	**ख**
(1)	रामचरित	–	महाकाव्य
(2)	मेरे जीवन के कुछ चित्र	–	आत्मकथा
(3)	तात्या टोपे	–	एकांकी
(4)	अक्ल के घोड़े दौड़ाना	–	मुहावरा
(5)	पंचवटी	–	खण्डकाव्य

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 5. एक वाक्य में उत्तर दीजिए –

1. गौतम के पुत्र का नाम राहुल था।
2. यह कथन महात्मा गांधी का है।
3. केवट की आजीविका का साधन उसकी नाव है।
4. गद्य–पद्य मिश्रित काव्य को चम्पू काव्य कहते है।
5. क्षेत्र विशेष में विचार विनिमय का साधन बोली है।

5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1+1=5

उत्तर 6. उषा प्रियंवदा जी द्वारा लिखित कहानी 'वापसी' के प्रमुख पात्र गजाधर बाबू दोबारा चीनी मिल की नौकरी पर चले गये थे। गजाधर बाबू रेलवे की नौकरी से रिटायर होने के बाद मन में अनेक सुखद कल्पनायें संजोते हुए शहर में अपने परिवार के पास लौटे थे किन्तु घर आकर उन्हें वास्तविकता का पता चलता है कि वे मात्र धनोपार्जन का साधन थे। उन्हें घर में बेटे, बेटी, बहु आदि यहां तक कि पत्नी से भी वह आदर सम्मान नहीं मिला जो घर के मुखिया को

मिलना चाहिए। उन्हें समझ में आ गया था कि उस परिवार में उनका कोई अस्तित्व नहीं है, वे उस परिवार का अंग नहीं बन सकते। इसी कारण गजाधर बाबू दोबारा चीनी मिल की नौकरी पर चले गये थे।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

''मैं क्यों लिखता हूँ'' निबंध के लेखक श्री रामनारायण उपाध्याय जी अपनी पुस्तक की रायल्टी अपने पाठकों का असीम स्नेह, उनकी खुशी व कृतज्ञता को मानते है, जिसे पाकर लेखक अपार संतोष का अनुभव करता है। एक दिन लेखक के एक मित्र ने पूछा कि आपको अपनी पुस्तक पर कितनी रॉयल्टी मिली? इस प्रश्न के उत्तर में लेखक को कोई ऐसा अंक नहीं मिला, जिसे वह रॉयल्टी के रूप में बता सके, किन्तु लोगों का प्यार, सम्मान, दूसरों की खुशी, ईमानदारी आदि उस नगद रॉयल्टी से अधिक है जिसे लेखक स्वयं वर्णित करता है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 7. कवि श्री बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन' ने अपनी कविता ''अरे तुम तो काल'' के भी काल में वीर पुरूषों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि तुम तो काल के भी काल हो अर्थात् भारतीय युवा मौत से डरने वाला नहीं है आवश्यकता पड़ने पर वह मौत से भी भिड़ जाता है। भारतीय युवा अपने प्राणों को हथेली पर रखकर देश की रक्षा करने को तत्पर रहते है। मौत उन्हीं को डराती है जो कायर होते है। वीर पुरूष से तो मौत भी दूर भागती है। भारत का युवा वीर पुरूष है इसलिए कवि ने उसे काल के भी काल कहा है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

वात्सल्य रस के सम्राट कहे जाने वाले सूरदास जी भक्तिकाल की कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि है। आपका वात्सल्य रस का चित्रण अद्वितीय है। कृष्ण के बाल रूप और उनकी बाल सुलभ क्रीड़ाओं का जैसा सजीव, विशद वर्णन सूरदास जी ने किया है वैसा विश्व साहित्य में कहीं नहीं मिलता। बालक कृष्ण का घुटनों के बल चलना, मणियों में दिखाई देने वाले अपने प्रतिबिंब को माखन खिलाना, चन्द्र खिलौना लेने की हठ करना आदि विविध बाल क्रीड़ाओं का वर्णन सूरसागर में चित्रित है। उन्हें बाल क्रीड़ाओं एवं बाल मनोविज्ञान का अच्छा ज्ञान था उनके काव्य में इन सभी तथ्यों का पाया जाना यह सिद्ध करता है कि ''सूर वात्सल्य'' के कुशल चितेरे थे।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 8. नीतिकाव्य के अन्तर्गत कबीरदास जी ने ''अमृतवाणी'' में मिट्टी के माध्यम से कहा है कि हे कुम्हार! आज तुम मुझे अपने पैरों तले रौंद कर प्रसन्न हो रहे हो, कल वह समय भी आयेगा जब मैं तुझे रौंदूंगी। मिट्टी एवं कुम्हार के माध्यम से कवि शरीर की नश्वरता की ओर संकेत कर रहा है। मनुष्य का शरीर मिट्टी के समान है जो मृत्यु होने पर मिट्टी में मिल जाता है इसलिए न कुम्हार को प्रसन्न होना चाहिए न मनुष्य को अपने शारीरिक सौन्दर्य पर गर्व करना चाहिए।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

प्रयोगवाद के प्रसिद्ध कवि श्री अज्ञेय द्वारा रचित कविता ''नदी के द्वीप'' में कवि ने प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग करते हुए मनुष्य व समाज को एक दूसरे का पूरक बताया है। कवि का मानना है कि समाज एक नदी के समान है और व्यक्ति एक द्वीप के समान है। जिस प्रकार नदी एक द्वीप को आकार देती है, वैसे ही समाज में रहकर मनुष्य अपना आकार अपनी पहचान बनाता है। समाज

तथा व्यक्ति दोनों में तालमेल होना अनिवार्य है। इस तालमेल के द्वारा ही व्यक्ति एवं समाज उन्नति कर सकता है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 9. प्रयोगवादी काव्य की विशेषताएं निम्नानुसार है –

1. **नवीन उपमानों का प्रयोग–** प्रयोगवादी कवियों ने पुराने एवं प्रचलित उपमानों के स्थान पर नवीन उपमानों का प्रयोग किया है।
2. **बुद्धिवादी की प्रधानता–** इस युग के कवियों ने बुद्धि तत्व को अधिक प्रधानता दी है।
3. **रूढ़ियों के प्रति विद्रोह–** इस युग के कवियों ने रूढ़ि मुक्त नवीन समाज की स्थापना पर बल दिया है।
4. **मुक्त छंदों का प्रयोग–** प्रयोगवादी कवियों ने अपनी कविताओं में मुक्त छंद का चयन किया है।

उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं एवं कोई अन्य बिन्दुओं पर भी विस्तार से दिये जाने पर प्रत्येक बिन्दु पर 1 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

नई कविता की विशेषताएं कवि व रचनाओं के नाम, विशेषताएं –

1. क्षणवाद को महत्व – जीवन के प्रत्येक क्षण का महत्व पूर्ण मानकर जीवन की एक–एक अनुभूति को कविता में स्थान प्रदान किया गया है।
2. लघु मानववाद की प्रतिष्ठा – मानव जीवन को महत्वपूर्ण मानकर उसे अर्थपूर्ण दृष्टि प्रदान की गई।

कवि	**रचना**
भवानी प्रसाद मिश्र	गीत फरोश
दुष्यन्त कुमार	सूर्य का स्वागत

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 10. गद्य की विधाओं को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा गया है। उनका वर्गीकरण निम्नानुसार है –

गद्य की विधायें

प्रमुख विधायें	**गौण विधायें**
1. कहानी	1. जीवनी
2. उपन्यास	2. आत्मकथा
3. नाटक	3. रेखाचित्र
4. एकांकी	4. संस्मरण
5. निबंध	5. रिपोर्ताज
6. आलोचना	6. भेंट वार्ता
	7. यात्रावृतान्त
	8. डायरी
	9. पत्र साहित्य
	10. गद्य काव्य

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

जीवनी और आत्मकथा में अंतर –

क्र.	**जीवनी**	**आत्मकथा**
1	जीवनी किसी महापुरूष के जीवन पर आधारित होती है।	आत्मकथा में लेखक अपनी कथा कहता है।
2	जीवनी सत्य घटनाओं पर आधारित होती है।	आत्मकथा काल्पनिक भी हो सकती है।
3	जीवनी लेखक तटस्थ रहकर लिखता	आत्मकथा लेखक अपनी स्मरण

	है।	शक्ति के आधार पर लिखता है।
4	जीवनी लेखक अपने विचार एवं प्रतिक्रिया नहीं दर्शाता।	आत्मकथा लेखक अपने विचार व्यक्त करता जाता है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 11. नरेन्द्र कोहली द्वारा लिखित उपन्यास अंश 'देवकी' में लेखक ने कंस के कारागार का सुंदर जीवन्त वर्णन किया है। देवकी कंस के कारागार की एक कोठरी में बंद थी। फिर भी जाने क्यों उसे लग रहा था उसके चारों ओर दीवारें नहीं है। वह किसी उन्मुक्त स्थान पर बैठी है। कभी–कभी लगता है कि मेघों पर बैठी है और मेघ खुले आकाश में भ्रमण कर रहे है, कभी लगता कि स्वयं ही मेघ है और पवन के पंख लगाकर सारे ब्रह्माण्ड में उड़ती फिर रही है। फिर लगता कि स्वयं ही आकाश भी है। सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र सब खिलौने है। वे सब उनके चारों ओर घूम रहे है, और हाथ जोड़े उनकी आज्ञा का पालन करने की प्रतीक्षा में है। इस कोठरी में तो वे खेल–खेल में आ बैठी है, जैसे कोई बच्चा लुकाछिपी खेलता हुआ अपने मित्रों को भ्रम में रखने के लिए घर के किसी अज्ञात कोने में आ छिपा है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

लेखक राम दरश मिश्र द्वारा लिखित ललित निबंध ''छोटे–छोटे सुख'' के आधार पर यह कथन अक्षरशः सत्य है कि, लेखक आजीवन मनुष्यता के प्रति संवेदनशील बने रहे। वे अत्यंत संवेदनशील इंसान थे। उनके जीवन में मनुष्यता को सर्वोपरि स्थान प्राप्त है। लेखक छोटी–छोटी उपलब्धियों में ही खुश रहना चाहता है। उसका मानना है कि बड़ा सुख प्राप्त करने के लिए मनुष्य को बहुत कुछ खोना पड़ता है, संवेदनाओं को समाप्त करना पड़ता है। पाने का बोध बड़ी चीज है बहुत लोग बहुतों से बहुत कुछ पा जाते है, परंतु वह बोध नहीं पाते, जो उनके मन को कृतज्ञ बनाए ओर मनुष्यता के प्रति संवेदनशील बनाए रहे।

लेखक चाहता है कि उनका मन मनुष्यता एवं मानव मूल्यों के प्रति संवेदनशील बना रहे। इस प्रकार कहा जा सकता है कि लेखक अपनी संतोषी प्रवृत्ति के कारण आजीवन मनुष्यता के प्रति संवेदनशील बने रहे।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 12. (अ) ब्याज स्तुति अलंकार– जहां निंदा के बहाने स्तुति की जाती है, वहां ब्याज स्तुति अलंकार होता है।

ब्याज निंदा अलंकार– जहां स्तुति के बहाने निन्दा की जाती है, वहां ब्याज निंदा अलंकार होता है।

(ब) महाकाव्य के तीन लक्षण –

1. महाकाव्य में जीवन का समग्र चित्रण होता है।
2. महाकाव्य में आठ या आठ से अधिक सर्ग होते है।
3. महाकाव्य का नायक धीरोदात्त गुणों से समन्वित होता है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

(अ) छप्पय छंद की परिभाषा – छप्पय छंद रोला और उल्लाला से मिलकर बनता है। इसके प्रथम चार चरण राला के जिसमें 24–24 मात्राएं होती है तथा अंतिम दो चरण उल्लाला के जिसमें 28–28 मात्राएं होती है।

(ब) हास्य रस का उदाहरण –

इस दौड़ धूप में क्या रखा, आराम करो, आराम करो।
आराम जिन्दगी की कुंजी, इससे न तपेदिक होती है।
आराम सुधा की एक बूंद, तन का दुबलापन खोती है।
आराम शब्द में राम छिपा, जो भव बंधन को खोता है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 13. (अ) भाषा और बोली में अंतर –

क्र.	भाषा	बोली
1	भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है।	बोली का क्षेत्र सीमित होता है।
2	भाषा का साहित्य प्रचुर मात्रा में लिखित रूप में होता है	बोली का साहित्य न्यून तथा अलिखित रूप में होता है।

(ब) मुहावरें –

1. आकाश के तारे तोड़ना – असंभव कार्य करना।
   प्रयोग– हर किसी के लिए आकाश के तारे तोड़ना संभव नहीं है।
2. अपने मुंह मिया मिट्ठू बनना – अपनी प्रशंसा स्वयं करना।
   प्रयोग– आजकल अपने मुंह मिया मिट्ठू बनने वालों की कमी नहीं है।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे। (2+2=4)

अथवा

(अ) वाक्य परिवर्तन –

1. जो व्यक्ति ईमानदार होते है, सभी उनका सम्मान करते है।
2. मोहन अब तुम जाओ।

(ब) भाव विस्तार –

अज्ञान आदमी को सर्वत्र पछाड़ता है। मानव जीवन के लिए अज्ञानता एक अभिशाप है। ज्ञान के कारण ही मनुष्य आज सभ्यता के उन्नत शिखर पर पहुंच सका है। ज्ञान के कारण ही मनुष्य सत्य असत्य, अच्छाई बुराई को पहचानने में समर्थ हो सका है। अज्ञानता मनुष्य को असभ्य बनाती है, उसे

विकास से विपरीत दिशा में ले जाती है, इसलिए कहा गया है ''अज्ञान सर्वत्र आदमी को पछाड़ता है''।

उपरोक्तानुसार सही लिखने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे। (2+2=4)

उत्तर 14. **लेखक परिचय** – शरद जोशी

1. **रचनाएं** :– पिछले दिनों, जीप पर सवार इल्लियां, परिक्रमा, एक था गधा।
2. **भाषा** :– शरदजी की भाषा अत्यंत सरल, सहज, सरस है। भाषा में एक विशिष्ट प्रवाह है। मुहावरों कहावतों का प्रभावशाली प्रयोग देखने को मिलता है। देशी–विदेशी शब्दों के प्रयोग से भाषा बोधगम्य बन गई है। शरद जी व्यंग्य के भाषागत सौन्दर्य को अपनी छोटी–छोटी उक्तियों के माध्यम से प्रभावशाली बनाने में सफल रहे है।
3. **शैली** :– शरदजी की शैली मुख्य रूप से हास्य व्यंग्य प्रधान है। उन्होंने सामाजिक विडम्बनाओं और उसके अन्तर्विरोधों को आधार मानकर व्यंग्य किये है। उनकी आलोचनात्मक शैली भी व्यंग्य से परिपूर्ण है। उनके हर व्यंग्य में ओज का पुट मौजूद है।
4. **साहित्य में स्थान** :– हिन्दी साहित्य में अप्रतिम व्यंग्यकार के रूप में शरदजी का महत्वपूर्ण स्थान है। आपके ओज पूण व्यंग्यों ने अपने समय में लोकप्रियता की चरण सीमा को पार किया है। हिन्दी गद्य साहित्य आपको सदैव याद रखेगा।

(2+1+1+1=5 अंक)

अथवा

लेखक परिचय – जैनेन्द्र कुमार

1. **रचनाएं** :– परख, सुनीता, त्याग पत्र, पाजेब।
2. **भाषा** :– जैनेन्द्र जी की भाषा सरल, सुबोध संस्कृतनिष्ठ है जो विषय के अनुकूल परिवर्तित हो जाती है। कहीं–कहीं वाक्य बड़े व तत्सम शब्दावली

से युक्त है। अंग्रेजी, उर्दू संस्कृत के शब्दों का प्रयोग भी उदारता से किया गया है। मुहावरे, कहावतों का भी यथास्थान प्रयोग किया गया है।

3. **शैली** :– जैनेन्द्र जी की कहानियों व उपन्यासों में मुख्य रूप से शैली के तीन रूप देखने को मिलते है विचार प्रधान विवेचात्मक शैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली, व्यावहारिक शैली।
4. **साहित्य में स्थान** :– जैनेन्द्र कुमार जी ने मनोवैज्ञानिकता प्रधान उपन्यास और कहानी की एक विशेष धारा प्रारंभ की थी। अपने इसी विशिष्ट रचना कौशल और सामाजिक सम्बद्धता के बल पर उन्होंने हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान बनाया है।

(2+1+1+1=5 अंक)

उत्तर 15. साहित्य परिचय– **घनानन्द**

1. **रचनाएं** :– घनानन्द कवित्र, सुजान विनोद, सुजान हित, वियोग बेलि।
2. **भावपक्ष** :– घनानंद जी मूलतः प्रेम के गायक थे। उनकी कविता प्रेमाभिव्यक्ति का साधन है। भक्ति भाव का परिपक्व, प्रकृति चित्रण, श्रंगार वर्णन आपकी कविताओं के मूल भाव है।
3. **कलापक्ष** :– घनानंद मूलतः श्रृंगार के गायक थे। जिसमें संयोग और वियोग दोनों पक्षों का सजीव चित्रण है। कवित्र, सवैया छंदों का बहुतायत से प्रयोग हुआ है। आपके काव्य में रूपक, उपमा, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा विरोधाभास आदि अलंकारों का सुंदर चित्रण हुआ है।
4. **साहित्य में स्थान** :– घनानन्द रीतिमुक्त काव्य धारा के श्रेष्ठ कवि है। ब्रज भाषा, छंद, शैली, अलंकार की दृष्टि से घनानन्द जी की रचनायें अत्यंत सरस एवं प्रौढ़ है।

(2+1+1+1=5 अंक)

अथवा

साहित्य परिचय– **जयशंकर प्रसाद**

1. **रचनाएंः–** आंसू, लहर, झरना, कामायनी।
2. **भाव पक्षः–** प्रसादजी प्रेम और सौन्दर्य के कवि है। उनका काव्य अनुभूति प्रधान है। आपकी रचनाओं में प्रेम, सौन्दर्य और करूणा की त्रिवेणी प्रवाहित होती है।
3. **कला पक्षः–** प्रसादजी का कला पक्ष भावपक्ष की अपेक्षा प्रौढ़ है। आपने संस्कृत गर्भित भाषा का प्रयोग किया है। आपकी रचनाओं में एक–एक शब्द रत्नों की तरह जड़ा हुआ है। भाषा में एक रसता विद्मान है। प्रसाद जी की कविताएं छंद बद्ध और छंद युक्त दोनों ही प्रकार की है।
4. **साहित्य में स्थानः–** कामायनी जैसी काजयी रचना करके स्वयं प्रसाद जी भीकालजयी होकर अमर हो गए। आपकी कविता आज भी सोये हुए लोगों में जागृति का बिगुल फूंक कर नवजीवन का संचार करती है।

(2+1+1+1=5 अंक)

उत्तर 16. गद्यांश की व्याख्या –

संदर्भः– पाठ– रंगोली, लेखक– डॉ. शिवप्रसाद सिंह

प्रसंगः– लेखक ने जीवन में रंगों के महत्व को समझाने का प्रयास किया है।

व्याख्याः– लेखक के अनुसार संपूर्ण विश्व रंगमय है। सभी के सिर पर रंगों को अजमाने का भूत सवार है। विभिन्न पार्टियों ने, विभिन्न देशों ने अपने झण्डों को अलग–अलग रंग का बनाया है। झण्डे के अतिरिक्त बातों के माध्यम से भी लोग रंग जमाने की कोशिश करते है। जिसकी बात प्रभावी हो, जिसकी बात मान ली जाए, समझ लो उसका रंग जम गया। वास्तव में रंग चढ़ने उतरने का क्रम जीवन के उत्थान पतन से जुड़ा हुआ है। कवियों ने भी अपनी कविताओं में विविध रंग भर दिये है। कहीं हम इन रंगों को पकड़ पाते है, कहीं ये चटकीले रूप में तो कहीं मटमैले रूप में दिखाई पड़ते है।

विशेषः–

1. भाषा सहज, सरल है।
2. शैली में व्यंग्य समाहित।
3. भाषा मुहावरेदार।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

अथवा

गद्यांश की व्याख्या –

संदर्भः– पाठ– भय, लेखक– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

प्रसंगः– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने आशंका को परिभाषित किया है।

व्याख्याः– किसी दुःख या विपत्ति का पूर्ण निश्चय न होने पर केवल उसकी संभावना मात्र के अनुमान से जो भय होता है, उसे आशंका कहते है। यह भी एक मनोविकार है, इसमें आकुलता नहीं होती, इसका संचार कुछ धीमा होता है और अधिक समय तक रहता है। उदाहरण के लिए यदि कोई यात्री घने जंगल से होकर निकल रहा है, रास्ते में चीता मिल भी सकता है और नहीं भी परंतु उसके मन में यह आशंका निरंतर बनी रहती है कि कहीं चीता न मिल जाए और इसी आशंका के साथ वह अपनी यात्रा पूर्ण करता है।

विशेषः–

1. मनोविकार का सुंदर विश्लेषण।
2. भाषा संस्कृत निष्ठ है।
3. आशंका को परिभाषित किया है।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

उत्तर 17. पद्यांश की व्याख्या –

संदर्भः– कविता– अमृत का घूंट शक्ति के, कवि– गजानन माधव मुक्तिबोध।

प्रसंगः– कवि ने बसंत के सौन्दर्य का मनुष्य की चेतना से जोड़ने का प्रयास किया है।

व्याख्याः– कवि मुक्तिबोध कह रहे है कि मैने अमृतपान कियाहै। जिससे स्वयं को ऊर्जा एवं शक्ति से परिपूर्ण महसूस कर रहा हूँ। धरती ने धान के रंग का घूंघट खोलकर कवि की चेतना में बसन्त की तपन महसूस कर ली है।

विशेषः–

1. प्रतीकात्मक शैली।
2. प्रकृति के माध्यम से चेतना की ओर संकेत।
3. मानवीकरण अलंकार।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

अथवा

पद्यांश की व्याख्या –

संदर्भः– कविता– पदावली, कवयित्री– मीरा बाई।

प्रसंगः– मीराबाई ने प्रियतम श्रीकृष्ण की प्राप्ति के प्रयास में वैराग्य धारण करने का निश्चय किया है।

व्याख्याः– मीराबाई कहती है कि मैं प्रियतम श्रीकृष्ण की प्राप्ति के लिए वैरागिन का रूप धारण कर लूंगी मेरे स्वमी श्रीकृष्ण जो वेशभूषा चाहेंगे मैं वही वेश भूषा धारण करूंगी। ताकि वह मेरी ओर आकर्षित हो सकें। शील एवं संतोष आदि गुणों को अपने ह्रदय में छिपाकर रखूंगी तथा इन्हीं के बल पर श्रीकृष्ण की कृपा प्राप्त कर सकूंगी। मन में उठने वाले विद्रोह एवं विरोधी भावों पर नियंत्रण करके समता भाव को धारण करूंगी।

विशेषः–

1. ब्रज मिश्रित राजस्थानी भाषा।
2. अनुप्रास एवं रूपक अलंकार।
3. शांत रस, श्रंगार रस।
4. माधुर्य गुण।

(संदर्भ–1, प्रसंग–1, व्याख्या–2, विशेष–1 कुल 5 अंक)

उत्तर 18. अपठित गद्यांश के उत्तर –

उत्तर 1. शीर्षक – नारी की महत्ता।

उत्तर 2. सारांश – प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक नारी के महत्व को स्वीकार किया गया है। जिस प्रकार दो पहिये के बिना गाड़ी नहीं चलती उसी प्रकार नर–नारी रूपी दो पहियों के बिना सामाजिक जीवन अधूरा है।

(1+3+1 कुल 5 अंक)

उत्तर 19.

बधाई पत्र

25, देसाई नगर इन्दौर

दिनांक 08.08.2012

प्रिय, मित्र राकेश,

मधुर यादें

मैं यहां सकुशल हूँ, आशा करता हूँ कि तुम भी वहां पर कुशलतापूर्वक होंगे। आज ही पता चला है कि राज्यस्तरीय वाद विवाद प्रतियोंगिता में तुमने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस सफलता पर तुम्हें बहुत–बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं कि तुम आगे भी इसी तरह सफलता प्राप्त करते रहो।

अपने मम्मी–पापा को मेरा प्रणाम कहना। छोटे भाई को स्नेह।

तुम्हारा मित्र

दिनेश

अथवा

प्रति,

पुलिस अधीक्षक महोदय,

जिला भोपाल म.प्र.

विषयः– चोरी की घटनाओं की ओर ध्यान आकृष्ट कराने विषयक।

महोदय

उपर्युक्त विषय में निवेदन है कि हमारे मोहल्ले में चोरी की घटनाओं में लगातार वृद्धि हो रही है। दिन दहाड़े चोरी सूने मकान देखकर उन्हें अपना निशाना बना रहे है। महिलाओं के गले से चेन व मंगलसूत्र झपटना साधारण बात हो गई है।

अतः आपसे निवेदन है कि गश्त बढ़ाकर नागरिकों को शांतिपूर्वक जीवन यापन करने का अधिकार दें।

धन्यवाद।

भवदीय

दिनांक

रामगोपाल वर्मा

71, अशोक नगर, भोपाल

(1+3+1 कुल 5 अंक)

उत्तर 20. निबंध–

इंटरनेट–आज के जीवन की आवश्यकता

प्रस्तावना :– कम्प्यूटर एक यांत्रिक मस्तिष्क का रूपात्मक योग है तथा इंटरनेट कम्प्यूटर का एक अंग है। समाज में आज कोई भी इससे अछूता नहीं है। आज छात्र इन्टरेनेट का उपयोग कर वांछित जानकारी प्राप्त कर अपना ज्ञानवर्द्धन कर रहे हैं। आज इसकी उपयोगिता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आज देश के अनेक क्षेत्रों में जैसे– बैंक, उद्योग, शिक्षा, चिकित्सा एवं दूरसंचार के साधनों आदि में भी इसका प्रयोग कुशलता से किया जा रहा है।

इन्टरनेट का इतिहास :– इंटरनेट एवं आधुनिक कम्प्यूटर नेटवर्किंग टेक्नोलॉजी का प्रारंभ 1970 के दशक में हुआ। सन् 1969 में अमेरिका के रक्षा विभाग की संस्था ''डिफेन्स एडवांसड रिसर्च प्रोजेक्ट एजेंसी'' ने सबसे पहला वाईड एरिया नेटवर्क बनाया। जिसका नाम था–ARPANET. प्रारंभ में इसके द्वारा अमेरिका के रक्षा विभाग के विभिन्न कार्यालयों को जोड़ा गया बाद में विश्वविद्यालयों तथा NATO देशों को जोड़ा गया। आज हम जिस इन्टरनेट का उपयोग कर रहे है वह इसी का पूर्ण विकसित रूप है।

इंटरनेट क्या है?– जिसका उपयोग आज सर्वाधिक हो रहा है वास्तव में उसकी जानकारी होनी आवश्यक है। सरल शब्दों में कहा जाए तो इन्टरनेट संसार में फैले कम्प्यूटरों का नेटवर्क है जिसके माध्यम से संसार की प्रत्येक जानकारी को पलभर में प्राप्त किया जा सकता है। इंटरनेट न कोई साफ्टवेयर है न कोई प्रोग्राम वरन यह ऐसी युक्ति है जहां विभिन्न जानकारियां एक उपकरण के माध्यम से मिल जाती है। इसके माध्यम से मिलने वाली जानकारी में संसार के व्यक्तियों तथा संगठनों का सहयोग रहता है।

इंटरनेट का प्रयोग :– आज इंटरनेट का प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में हो रहा है। कुछ प्रमुख क्षेत्र इस प्रकार है :–

1. **शिक्षा के क्षेत्र में :–** शिक्षा के क्षेत्र में इंटरनेट के माध्यम से विभिन्न विषयों से सम्बद्ध जानकारी सहज ही प्राप्त की जा सकती है। विषय विशेषज्ञों की राय ली जा सकती है। परीक्षा परिणाम भी आज शीघ्र ही प्राप्त किये जा सकते है।
2. **मनोरंजन के क्षेत्र में :–** मनोरंजन के क्षेत्र में इंटरनेट के द्वारा क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। इसके माध्यम से मनपंसद संगीत का आनंद ले सकते है। नई फिल्मों की जानकारी तथा संगीत के विभिन्न पक्षों की सूक्ष्म जानकारी तथा आनंद लिया जा सकता है। तनावभरे जीवन में इंटरनेट राहत का पल है।

3. **कला के क्षेत्र में :–** आज इंटरनेट के माध्यम से कलाकार बना जा सकता है। इसके लिए जन्मजात कलाकार होना आवश्यक नहीं है। इंटरनेट के द्वारा व्यक्ति स्क्रीन पर चित्र बनाता है और प्रिंटर के माध्यम से बिना रंग और तूलिका का प्रयोग किये बिना सुंदर रंगीन चित्र प्राप्त किया जा सकता है।
4. **पुस्तकों के क्षेत्र में :–** पुस्तकों तथा समाचार पत्रों के प्रकाशन में भी इंटरनेट का अपूर्ण योगदान है। यदि समाचार पत्र समय पर न मिले तब भी पलक झपकते ही किसी भी समाचार पत्र को इंटरनेट पर पढ़ा जा सकता है। देश ही नहीं विश्व भर के साहित्यकारों की रचनाओं का आनंद इंटरनेट पर प्राप्त होता है। साहित्य में रूचि रखने वाले इंटरनेट के माध्यम से अपनी रचनाओं का प्रकाशन कर सकते है।
5. **वैज्ञानिक क्षेत्र में :–** विज्ञान भी इंटरनेट से जुड़ा हुआ है। अंतरिक्ष तथा अनेक वैज्ञानिक खोजों की सटीक तथा तथ्यपरक जानकारी इंटरनेट प्रदान करता है।
6. **चिकित्सा के क्षेत्र में :–** चिकित्सा संबंधी विभिन्न जानकारियां इंटरनेट से प्राप्त की जा रही है। चिकित्सा सुविधाओं से वंचित ग्रामीण क्षेत्रों में भी इंटरनेट के माध्यम से चिकित्सकों को सुविधा मार्ग दर्शन दिया जा रहा है। आज आम इंसान भी विभिन्न रोगों और उपचार केन्द्रों की जानकारी इंटरनेट से प्राप्त कर लेता है।
7. **कृषि क्षेत्र में :–** भारत कृषि प्रधान देश है। आधुनिक युग का किसान इंटरनेट के माध्यम से कृषि की उन्नत तथा नयी तकनीकों की जानकारी प्राप्त कर रहा है। आज किसान घर बैठे ही उन्नत कृषि के गुर सीख रहे है।
8. **बैंकिंग के क्षेत्र में :–** भारतीय बैंकों में खातों के संचालन में इंटरनेट का उपयोग हो रहा है। आम व्यक्ति भी बैंक संबंधी विभिन्न कार्यों के लिए इंटरनेट का प्रयोग करके समय की बचत कर रहा है।

इन क्षेत्रों के अतिरिक्त डिजाइनिंग, संचार, संगीत आदि में भी इंटरनेट का प्रयोग हो रहा है।

इंटरनेट के लाभ :–

1. समय की बचत होती है।
2. एक स्थान पर बैठकर अनेक स्थानों से संबंधित जानकारी प्राप्त होती है।
3. तथ्यपरक जानकारी प्राप्त होती है।
4. इंटरनेट सरल तथा सुलभ माध्यम है जिससे हम अनेक क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त करते है।

इंटरनेट से हानि :–

1. इंटरनेट पर अश्लील वेबसाइट के कारण समाज में नैतिकता का संकट उत्पन्न हो गया है।
2. इंटरनेट का अत्यधिक प्रयोग करने के कारण मनुष्य स्वविवेक एवं बुद्धि का प्रयोग कम कर रहा है।
3. इंटरनेट के अधिक उपयोग से स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है।

उपसंहार :– इंटरनेट के अधिकाधिक प्रयोग ने सिद्ध कर दिया है कि यह नव चमत्कार के रूप में मान्य कर लिया गया है। किन्तु यह भी सर्वमान्य तथ्य है कि प्रत्येक वस्तु के श्वेत श्याम पक्ष होते है। सदुपयोग करने वालों के लिए जहां इंटरनेट अनूठी सुविधा की खान है वहीं इंटरनेट का दुरूपयोग करने वालों ने असुविधाओं के श्याम पक्ष को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि हम इंटरनेट की उपयोगिता पहचानें तथा स्वयं अपनी, समाज की तथा देश की उन्नति के कारक बनें।

प्रस्तुतिकरण 2 अंक, विषयवस्तु 4 अंक, भाषाशैली 2 अंक, उपसंहार 2 अंक।

उपरोक्तानुसार लिखने पर पूर्ण 10 अंक 10 अंक प्राप्त होंगे

– – – – –